# सैंटर फॉर डिस्टैंस एंड आनलाईन ऐजुकेशन विभाग

## पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला

*कक्षा : बी.ए. भाग–3*
*(हिन्दी साहित्य)*
*माध्यम : हिन्दी*

*सैमेस्टर–5*
*एकांश संख्या : 1*

*पाठ नं.*

1.1 कबीर

1.2 सूरदास

1.3 तुलसीदास

**Department website : www.pbidde.org**

# B.A. - III

## COURSE CODE - HINBA3PUP

प्राइवेट, डिस्टैंस ऐजुकेशन और रेगुलर विद्यार्थियों के लिए

2022–2023, 2023–24, 2024–25 सैशन के लिए

## Semester-V

प्राईवेट और डिस्टैंस ऐजुकेशन के विद्यार्थियों के लिए पूर्णांक–100
समय : 3 घण्टे
पास प्रतिशत : 35

रैगुलर विद्यार्थियों के लिए पूर्णांक–100
लिखित परीक्षा : 75 अंक
आंतरिक मूल्यांकन : 25 अंक
पास अंक : लिखित में 26, आंतरिक में : 9
पास प्रतिशत : 35
समय : 3 घण्टे

नोटः सप्ताह में छह पीरियड में से दो पीरियड कम्पोजीशन को दिए जायेंगे, कम्पोजीशन ग्रुप में विद्यार्थियों की संख्या 07–10 तक रहेगी। शेष चार पीरियड टैक्स्ट को दिए जायेंगे।

### हिंदी साहित्य और काव्यशास्त्र– (विकल्प-I) HINBA3PUP-109

पाठ्यक्रम

उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों को काव्य के स्वरूप व काव्य के भेदों से परिचित करवाना।
2. काव्य के विभिन्न संप्रदायों से विद्यार्थियों को अवगत करवाना।
3. विद्यार्थियों को काव्य के प्रयोजन से परिचित करवाना।

**अधिगम प्रतिफल :–**

1. विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्र के विभिन्न सम्प्रदायों तथा शब्द–शक्तियों से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थियों की काव्यशास्त्र में रुचि पैदा होगी।
3. विद्यार्थियों में साहित्य की समझ पैदा होगी।

**खण्ड–क**

इस खण्ड के निम्नानुसार दो भाग होंगे :–

1. काव्यशास्त्र : काव्य का स्वरूप, प्रयोजन, भेद, महाकाव्य के लक्षण, शब्द–शक्तियाँ।

2. छन्द (लक्षण–उदाहरण सहित) दोहा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका, कुँडलियां, छप्पय, बरवै, उल्लाल, तोमर व अहीर (केवल दस छन्द)

**खण्ड–ख**

इस खण्ड के निम्नानुसार दो भाग होंगेः

1. **मध्या** सम्पादक : डॉ. रवि कुमार अनु, पंजाबी विश्वविद्यालय प्रकाशन, पटियाला (केवल बिहारी को छोड़कर अन्य सभी कवि)।
2. **निबन्ध परिवेश** (सं. योगेन्द्र बख्शी) पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

**केवल पांच निबन्धकार :** भारतेन्दु, पूरन सिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, धर्मवीर भारती, कुबेरनाथ राय।

**खण्ड–ग**

उपर्युक्त समूचे पाठ्यक्रम में से 15 लघु उत्तरीय प्रश्न बिना विकल्प के पूछे जाएंगे।

## विद्यार्थियों और परीक्षकों के लिए आवश्यक निर्देश

1. प्रश्न पत्र को तीन खण्डों क, ख, ग में विभाजित किया जाएगा।
2. पाठ्यक्रम के सभी खण्डों में से प्रश्न पूछे जाएंगे।
3. **खण्ड–क**

i) काव्यशास्त्र – **(दो में से एक प्रश्न) अंक 1x9=9** (रै.)

**1x12=12** (प्रा. और डि.ए.)

ii) छन्द (निर्धारित पाठ्यक्रम) – **(दो में से एक प्रश्न) अंक 1x8=8** (रै.)

**X7 = 7** (प्रा. और डि.ए.)

**4.खण्ड–ख**

i) मध्या –आलोचनात्मक प्रश्न

(कवि–परिचय, रचना का सार/

समीक्षा, उद्देश्य, विशेषताएं आदि) – **(दो में से एक प्रश्न) अंक 1x9=9** (रै.)

**1x12=12** (प्रा. और डि.ए.)

सप्रसंग व्याख्या – **(दो में से एक व्याख्या) अंक 1x5=5** (रै.)

**1x7=7** (प्रा. और डि.ए.)

ii) निबन्ध परिवेश–आलोचनात्मक प्रश्न

(लेखक–परिचय, रचना का सार,

समीक्षा, उद्देश्य, विशेषताएं आदि) – **(दो में से एक प्रश्न) अंक 1x9=9** (रै.)

**1x10=10** (प्रा. और डि.ए.)

सप्रसंग व्याख्या – **(दो में से एक व्याख्या) अंक 1x5=5** (रै.)

**1x7=7** (प्रा. और डि.ए.)

5. **खण्ड–ग** : इस खण्ड के अन्तर्गत समूचे पाठ्यक्रम में से 15 लघु उत्तरीय प्रश्न बिना विकल्प के पूछे जाएंगें। सभी प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य होगा।

अंक **15×2=30** (रै.)

**15x3=45** (प्रा. और डि.ए.)

**आंतरिक मूल्यांकन के लिए कुल 25 अंकों का विभाजन निम्न प्रकार से है :–**

कुल अंक : **25**

**Attendance- 5**

**Assignment/ Project - 10**

**Two Mid Sem. Exam* - 10**

*** Average of both Mid-sem/Internal Exa**

Updated on June, 2023

बी.ए. भाग तीसरा

सैमेस्टर-V

मध्या

पाठ संख्या : 1.1

लेखिका : डॉ0 कुलदीप कौर

# कबीर

## इकाई की रूपरेखा :

1.1.0 उद्देश्य

1.1.1 प्रस्तावना

1.1.2 कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व

1.1.3 कबीर की काव्यगत विशेषताएं

1.1.4 सप्रसंग व्याख्या

1.1.4.1 स्वयं जांच अभ्यास

1.1.5 सारांश

1.1.6 प्रश्नावली

1.1.7 सहायक पुस्तकें

### 1.1.0 उद्देश्य :

आप इस पाठ में भक्तिकाल के जन–कवि कबीर से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात्

* कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
* कबीर की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
* काव्य की व्याख्या कर सकेंगे।

### 1.1.1 प्रस्तावना :

संत कबीर उस समय अवतरित हुए जब मध्यकाल अंधकार से घिरा हुआ था, अपनी वाणी के माध्यम से कबीर ने कुरीतियों व आडम्बरों के अंधेरे को दूर करने का प्रयत्न किया जिसमें वह सफल भी हुए। चौतरफा मार झेलती जनता के लिए कबीर वाणी राहत का साधन बन कर आई। मानवतावादी कबीर समाज में व्याप्त संकीर्ण भावनाओं के विरुद्ध थे तथा वह इस पर करारी चोट भी करने से नहीं चूकते थे। उन्होंने एकता की भावना की बात करते हुए सच्चे मार्ग को दर्शाने का प्रयास किया। वास्तव में वह इस मध्ययुग के क्रांति पुरुष थे।

## 1.1.2 कबीर का व्यक्तित्व और कृतित्व :

### व्यक्तित्व :

मध्ययुगीन हिंदी निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक संत कवि कबीरदास के जन्म को लेकर प्रायः विद्वानों में मतभेद द्रष्टव्य होता है। आचार्य शुक्ल, डॉ0 द्विवेदी आदि विद्वान सम्वत् 1456 को ही कबीर का जन्म स्वीकार करते हैं। उनके जन्म के विषय में यह पद्य प्रख्यात है–

चौदह सौ पचपन साल गए, चन्द्रवार एक ठाठ गए।
जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी को प्रगट भए।।
घन गरजे दामिनि दमके, बूँदे बरसे झर लाग गए।
लहर तालाब में कमल खिलै, तहै कबीर भानु प्रकट भए।।

उपरोक्त पद्य के अनुसार कबीर का जन्म सम्वत् 1455 ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को सोमवार के दिन हुआ। लेकिन ज्योतिष गणना के अनुसार यह सम्वत् 1456 में पड़ता है। इण्डियन क्रोनेलॉजी के आधार पर उनका जन्म सम्वत् 1455 ही स्वीकार किया गया है। कबीर के जन्म को लेकर कई किंवदन्तियां प्रचलित हैं। कुछ एक का कहना है कि एक विधवा ब्राह्मणी ने लोक–लाजवश अपने नवजात शिशु को काशी के लहरतारा नामक तालाब के निकट फेंक दिया था, जिसका पालन पोषण निःसंतान जुलाहा दम्पती नीरू और नीमा ने किया। इस बात का समर्थन कबीर का स्वयं को जुलाहा कहने से भी हो जाता है। कबीर गृहस्थी थे। इनकी पत्नी का नाम लोई था। परन्तु डॉ0 रामकुमार वर्मा ने इनकी एक अन्य पत्नी भी स्वीकार की है जिसका नाम धनिया या रमजनिया था। कमाल और कमाली इनके पुत्र व पुत्री थे। कबीर के गुरू को लेकर भी अनेक किंवदंतियां प्रचलित हैं। एक के अनुसार रामानंद ने कबीर को राम नाम का गुरूमंत्र तब दिया जब वह प्रातः ही स्नान के लिए जा रहे थे। कबीर वहीं किनारे पर बनी सीढ़ियों पर लेट गए जिससे कि स्वामी जी को अंधेरे में दिखाई न पड़ें, पैर पड़ने पर रामानंद के मुख से 'राम–राम' निकल पड़ा और कबीर ने इसे गुरूमंत्र समझकर ग्रहण किया किन्तु कबीर के राम रामानंद के राम से भिन्न हो गए थे। कबीर परम संतोषी, उदार, निर्भीक, सत्यवादी, अहिंसा, सत्य और प्रेम के समर्थक, बाह्यडम्बर–विरोधी तथा क्रांतिकारी सुधारक थे। वह मस्तमौला, लापरवाह फक्कड़ फकीर थे। वह सिकन्दर लोदी के सामने झुके नहीं, हिन्दू और मुसलमानों के प्रबल रोष ने उन्हें तनिक भी विचलित नहीं किया। कहते हैं कि वह 120 वर्ष तक जीवित रहे, सम्वत् 1575 में मगहर में देहांत हुआ।

### कृतित्व :

कबीरदास के नाम वैसे तो कई रचनाएं मिलती हैं किन्तु यह प्रामाणिक सिद्ध नहीं हुई। नागरी प्रचारिणी सभा की खोज के आधार पर कबीर की लगभग 150 रचनाएं बताई जाती है परन्तु इनमें भाषा–शैली की एकरूपता की कमी है। वास्तव में कबीर मौखिक प्रवचनों में ही विश्वास रखते थे, उनके हाथ की लिखी कोई पुस्तक नहीं है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वे निरक्षर थे। जैसा कि कबीर ने स्वयं एक साखी में कहा है–

मसि कागद छुयो नहीं, कलम गही नहिं हाथ।
चारिउ जुग को महातम, मुखहिं जनाई बात।।

क्योंकि कबीर अनपढ़ थे इसलिए उनकी वाणी का संकलन उनके शिष्यों ने किया होगा। कबीर वाणी लोकप्रिय हो गई थी शायद इसीलिए श्रोताओं ने अपने कथन भी उसमें जोड़ दिए। परन्तु इतना होने पर भी उनकी रचना 'बीजक' सबसे विश्वसनीय ग्रंथ स्वीकारी गई है। इसमें तीन भाग हैं–साखी, सबद और रमैनी। इनमें से साखी में सामाजिक भावबोध व आध्यात्मिक भावबोध प्रधान रूप से उकेरा गया है। सबद के अंतर्गत आध्यात्मिक भावबोध प्रधान है, इसमें धार्मिक समन्वय पर बल दिया गया है। कबीर से पूर्व रमैनी बहुत कम मिलती है। वैसे दोहा–चौपाई छन्द जो रमैणी में प्रयुक्त होते हैं, वे पुराने हैं। कबीर बीजक के सम्पादक के अनुसार रमैणी रामणी शब्द का रूपांतर है तथा वे मानते हैं कि इसका विषय जीवात्मा की सांसारिक क्रीड़ाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन है। अपने काव्य के माध्यम से कबीर ने समाज में नई लहर का प्रादुर्भाव किया। उनकी रचनाएँ 'गुरू ग्रंथ साहिब' में भी संकलित हैं जोकि सिख धर्म के अनुयायियों का सर्वमान्य ग्रंथ है। इस ग्रंथ का संकलन सम्वत् 1661 में हुआ।

### 1.1.3 कबीर की काव्यगत विशेषताएँ :

कबीर को निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक माना जाता है। वह भक्तिकाल के उन कवियों में से हैं जिन्होंने जन–भाषा में भक्ति का प्रकाश फैलाकर लोकमानस को बाह्यडम्बरों, पाखण्डों, अनाचार, अंधविश्वास आदि के घोर अंधेरे से बाहर निकालने का कार्य किया। कबीर की प्रेममयी वाणी ने जहाँ मानव मन को सार्थक मानव मूल्य से भर दिया, वहीं उनकी ओजस्वी वाणी मानसिक संकीर्णताओं के बंधन को तोड़ती द्रष्टव्य होती है। वह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनके काव्य की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :–

1. **निर्गुण ईश्वर की उपासना :** कबीर ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना में विश्वास रखते हैं। उनका मानना है कि ईश्वर एक है और वह निर्गुण निराकार हे। वह अजन्मा व अनाम है तथा कण–कण में समाया है। वह ही इस सारी सृष्टि का कर्ता है :–

''जाके मुँह माथा नहीं, नाही रूप कुरूप।
पहुंप बास ते पातरा, ऐसा तत अनूप।।''

2. **गुरू की महिमा :** सभी भक्तिकाल कवियों ने गुरू की महिमा का गुण–गान किया है। कबीर भी इस मत से अछूते नहीं रहे। उनकी दृष्टि में गुरू की महिमा अपार है। उसकी कृपा के बिना ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए वह गुरू को ईश्वर से भी बड़ा स्वीकार करते हैं। कबीर का कहना है कि ईश्वर के रूठने पर तो गुरू का सहारा प्राप्त हो सकता है किन्तु गुरू के रूठने पर तो गुरू का सहारा प्राप्त हो सकता है किन्तु गुरू के रूठने पर कोई सहारा नहीं मिल सकता –

''कबीर ते नर अंध है, गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहीं ठौर।।''

3. **समाज सुधारक :** कबीर संत होने के साथ–साथ एक सच्चे समाज सुधारक भी थे। उन्होंने वर्ण–व्यवस्था, छुआछूत, ऊँच–नीच तथा अन्य ऐसी कुरीतियों का भरसक विरोध किया।

''जाति–पाति पूछे नहिं कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।''

कबीर का मानना है कि सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं इसलिए वह सब एक समान हैं। उस समय समाज अनेक मतों एवं विश्वासों में बंटा हुआ था। विभिन्न प्रकार के धार्मिक अंधविश्वासों, बाह्याडम्बरों और मिथ्या प्रदर्शनों ने समाज को अपने जाल में फांस रखा था। यहाँ पर कबीर जप, तिलक, माला, चंदन आदि कर्म–काण्डों के विरुद्ध थे। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों के इन आडम्बरों का कड़ा विरोध किया।

''कांकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई बनाय।
ता चढ़ मुल्ला बाँग दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।''

कबीर धर्म के नाम पर बाह्य विधि–विधानों को त्यागने और सार को ग्रहण करने के पक्ष में थे।

**4. एकेश्वरवाद का समर्थन एवं बहुदेववाद का विरोध :** कबीर ने अपनी वाणी के माध्यम से हिन्दू–मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया इस कारण उन्होंने समाज में व्याप्त अवतारवाद, बहुदेववाद का जोरदार शब्दों में खण्डन किया। उनका मानना था कि यह मत ही समाज को भिन्न–भिन्न भागों में विभक्त करता है। इन बातों को ध्यान में रखकर कबीर ने एकेश्वरवाद पर बल दिया। उनका कहना है कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है :–

''कस्तूरी कुंडल बसै, मृत ढूँढै बन माहिं
ऐसे घट में पीव है, दुनियाँ जाने नाहिं।।''

कबीर के अनुसार 'राम और रहीम' 'कृष्ण और करीम' ईश्वर का एक ही रूप है।

**5. भक्ति–भावना :** कबीर निराकार ईश्वर में आस्था रखते थे इसलिए उनकी भक्ति भावना को निर्गुण से जोड़ा गया है। वह ईश्वर के प्रति अनन्य भाव से, बिना किसी शर्त आत्म–समर्पण को महत्व देते हैं। उन्होंने अहंकार, इच्छाओं और आशाओं के त्याग पर बल दिया है। उनकी भक्ति को मूलाधार प्रेम–भक्ति रही है। उनके अनुसार जिसने ईश्वर की भक्ति नहीं की, जिसने प्रेम का स्वाद नहीं लिया उस मनुष्य का जीवन व्यर्थ है।

''कबीर प्रेम न चाखिया, चषि न लीया साव।
सूने घर का पाहुणां, ज्यूं आया त्यूं जाव।।''

**6. नाम–स्मरण पर बल :** कबीर कहते हैं कि ईश्वर के नाम–स्मरण में बड़ी शक्ति है। नाम–स्मरण से ही मुक्ति की राह सम्भव है। उनके अनुसार नाम–स्मरण से माया के बंधन टूट जाते हैं और भक्ति तथा मुक्ति दोनों की प्राप्ति होती है :–

''चरण कंवल चित्त लाइये, राम नाम गुन गाइ रे।
है कबीर संसा नहीं, भक्ति, मुक्ति गति पाह रे।।''

**7. माया का विरोध :** ज्ञानमार्गी कवियों ने माया को ईश्वर भक्ति और प्राप्ति में बाधक स्वीकार किया है। कबीर भी इसमें दो मत नहीं रखते हैं उन्होंने माया को महाठगनि स्वीकार करते हुए सतगुरू की कृपा से ही इससे बचने का उपाय माना है।

''माया महा ठगनी हम जानी।
तिरगुन फांस लिए कर डोले, बोले मधुर बानी।''

**8. रहस्यवाद :** कबीर की रहस्यवादी भावना ने उन्हें रहस्यवादी कवि होने का गौरव प्रदान किया है। प्रेम–मूलक भक्ति भावना और निर्गुण ब्रह्मवाद की उनकी वैयक्तिक साधना ने उनके काव्य में रहस्यवाद का प्रकाश फैलाया है। उन्होंने प्रेम की चरम परिणति वाम्पत्य प्रेम में देखी है। उन्होंने आत्मा को परमात्मा की पत्नी माना है जो पिया मिलन की आशा में विरह के क्षण भी भोगती है। परन्तु वास्तव में कबीर का रहस्यवाद वैराग्य से नहीं अपितु प्रेम और प्रीति की भावना से भरा पड़ा है। जब आत्मा का परमात्मा से तादम्य हो जाता है, दोनों मिलकर एक हो जाते हैं तभी रहस्यवाद का आदर्श पूर्णता को प्राप्त करता है :–

''लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।''

**9. भाषा–शैली :** कबीर की भाषा का कोई एक रूप नहीं है, उनकी भाषा में राजस्थानी, पंजाबी, खड़ी बोली, पूर्वी हिन्दी, ब्रज तथा फारसी आदि के शब्दों का प्रयोग भी मिलता है वास्तव में उनकी भाषा जन–भाषा है। आचार्य शुक्ल ने इसको 'सुधक्कड़ी' भाषा कहा है। हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार ''भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा, उसे उसी रूप में कहलवा दिया।'' उन्होंने मुख्यतः दोहा, चौपाई और पद का प्रयोग किया है। उनके काव्य में कई राग–रागनियां भी द्रष्टव्य होती हैं। अलंकारों का सहज प्रयोग भी उनके काव्य में दिखाई देता है। उन्होंने रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा, यमक, अनुप्रास, विरोधाभास, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि कबीर अपने समकालीन अन्य संत व सूफी कवियों से कई कारणों से पृथक् व अग्रणी थे। कबीर का सम्पूर्ण काव्य उनकी अनुभूतियों को आधार बनाकर जन–मानस को सही व सार्थक दिशा प्रदान करने का कार्य करता है। वह निर्गुण ईश्वर के माध्यम से समाज में फैली आपसी बाँट को समाप्त करना चाहते थे और समस्त समाज को एकता के सूत्र में बांधना चाहते थे। उनका काव्य न केवल संत काव्य में अपितु समस्त हिंदी–साहित्य में विशेष स्थान रखता है।

### 1.1.4 प्रसंग व्याख्या :

**1. पीछे लागा जाइ या.....दू–यू कूप पडत।**

**प्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक 'मध्या' में संकलित कबीर वाणी में से उद्धृत किया गया है। इस पद्यांशा में कबीर ने गुरु की महिमा की अभिव्यक्ति की कि गुरु ही भक्त की अन्तरात्मा से अज्ञान का पर्दा उठाकर रोशनी दिखा सकता है।

**व्याख्या :** कबीर जी कहते हैं कि मैं लोकाचार और वेदाचार का अंधाधुंध अनुसरण करता हुआ चला जा रहा था, परन्तु फिर मुझे गुरु मिला जिसने मेरी बुद्धि पर पड़े अंधकार को मिटाने के लिए दीपक रूपी ज्ञान को हाथ थमा दिया और मुझे रोशन कर दिया। इतना ही नहीं कबीर जी गुरु के अज्ञानी होने पर भी विचार करते हैं उनका कहना कि अगर गुरु ही मोह–माया में लिप्त है, अंधा है तो शिष्य तो उससे ज्यादा अंधा होगा, क्योंकि गुरु मार्ग नहीं बता पाता और अंत में दोनों ही नरक में जा गिरते हैं।

**विशेष :** 1. गुरु के महत्त्व को प्रतिपादित किया है।

2. भाषा विषयानुकूल, सहज और सरल है।

**2. कबीर प्रेम न चाषिया.....ज्यूँ आया त्यूँ जाव।**

**सप्रसंग व्याख्या :** प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक 'मध्या' में संकलित कबीर वाणी में से उद्धृत किया गया है। कबीर जीवात्मा को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि हे मनुष्य तूने ईश्वर प्रेम का अनुभव अभी किया, तुमने उस अनुभव का स्वाद नहीं लिया। तुम्हारी स्थिति तो उस अतिथि जैसी है जो सूने घर से जैसे का वैसा ही वापिस चला जाता है।

**विशेष :** 1. ईश्वर प्रेम से वंचित व्यक्ति की तुलना सूने घर से की गई है।

2. ईश्वर अनुराग के महत्त्व का प्रतिपादित किया है।

**3. बहुत दिनन थैं मैं प्रीतम पाये.....सखी सुहाग राम मोहि दीन्हा।**

**सप्रसंग व्याख्या :** प्रस्तुत पद्यांश पाठ्यक्रम में निर्धारित पुस्तक 'मध्या' में संकलित कबीर वाणी में से उद्धृत किया गया है। इस पद्यांश में कबीर प्रभु मिलन से प्रसन्न होते लिखते हैं। मैं बहुत दिनों अर्थात् जन्म के बाद ही जिस प्रभु से मैं बिछुड़ गई उनको मैंने घर पर बैठे ही पा लिया है। अब तो मैं उनके मंगलाचरण और राम स्मरण में ही अपना ध्यान लगा कर रखूँगी। उसके आने से मन मंदिर में उजाला हो गया है और मैं उसके साथ सो रही हूँ। मुझे जो मिला है उसका व्याख्यान नहीं किया जा सकता। मैंने कुछ नहीं किया यह उस प्रभु का बड़प्पन है जिसने मुझे सब कुछ दिया।

**विशेष :** 1. प्रस्तुत पद में कबीर ने परमात्मा को पति और आत्मा को पत्नी रूप में अभिव्यक्त किया है।

2. पति–सुख के माध्यम से आत्मा के आनन्द की बात की है।

### 1.1.4.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. कबीर की भक्ति–भावना के संदेश पर नोट लिखें।

.....

.....

.....

## 1.1.5 सारांश

निर्गुण काव्यधारा के प्रर्वतक कबीर ने मध्यकालीन समाज में फैली सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों को तोड़ते हुए धर्म के सही मार्ग पर चलने का उपदेश दिया।

## 1.1.6 प्रश्नावली :

1. कबीर एक सच्चे समाज–सुधारक थे इस पर अपने मत लिखें।
2. कबीर के रहस्यवाद पर नोट लिखें।
3. कबीर की विरह–भावना पर चर्चा कीजिए।
4. कबीर के राम पर अपने विचार रखें।

### 1.1.7 सहायक पुस्तकें :


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | कबीर | : | हजारी प्रसाद द्विवेदी। |
| 2. | कबीर का रहस्यवाद | : | डॉ0 रामकुमार वर्मा। |
| 3. | हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय | : | पीताम्बर दत बडथ्वाल। |

पाठ संख्या : 1.2 लेखिका : डॉ0 कुलदीप कौर

## जायसी

**इकाई की रूपरेखा :**

1.2.0 उद्देश्य
1.2.1 प्रस्तावना
1.2.2 जायसी का व्यक्तित्व और कृतित्व
1.2.3 जायसी की काव्यगत विशेषताएँ
1.2.4 सप्रसंग व्याख्या
1.2.4.1 स्वयं जांच अभ्यास
1.2.5 सारांश
1.2.6 प्रश्नावली
1.2.7 सहायक पुस्तकें

### 1.2.0 उद्देश्य :

आप इस पाठ में भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा की प्रेममार्गी शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि मलिक मुहम्मद जायसी से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् –

* जायसी के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
* जायसी की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
* जायसी के काव्य की सप्रसंग व्याख्या कर सकेंगे।

### 1.2.1 प्रस्तावना :

जायसी प्रसिद्ध सूफी कवि हैं। इनके काव्य में भारतीय कथाओं को आधार बनाकर सूफी सिद्धांतों की अभिव्यक्ति हुई है। जायसी मध्यकालीन परिस्थितियों में प्रेम की धारा बहाने वाले कवि हैं। इनकी रचनाओं में इसके प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं। इन्होंने इश्क मिजाजी से इश्क हकीकी की व्याख्या की है। पद्मावत इसकी प्रसिद्ध रचना है।

### 1.2.2 जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

जायसी हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल की निर्गुण काव्य परम्परा में सूफी काव्यधारा के प्रसिद्ध कवि हैं। इन का पूरा नाम मलिक मुहम्मद जायसी है। सूफी मत के चार सम्प्रदाय प्रचलित रहे हैं – चिश्ती सम्प्रदाय, सुहरावर्दी सम्प्रदाय, कादरी सम्प्रदाय और नक्शबन्दी सम्प्रदाय। इन सम्प्रदायों की धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताएं एक तरह की थी और सभी ने उदारता, सरलता एवं प्रेम का समर्थन किया। सब ने सरल मार्ग से ईश्वर की उपासना पर बल दिया और सामाजिक एकता का प्रचार किया। सूफी विचारधारा में धर्म तथा जातिगत भेदभाव नहीं मिलता। भारत में इन सम्प्रदायों से प्रभावित प्रेम काव्य की रूपरेखा आदिकाल में ही प्राप्त होती है। इस समय के प्रेमग्रंथों की परम्परा को आगे बढ़ाने में जायसी का विशेष योगदान रहा है। जायसी एक सूफी फकीर थे। सच्चे मुसलमान होते हुए भी उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम में कोई भेद नहीं समझा। इन्होंने प्रेम को भक्ति का आधार माना और पारस्परिक प्रेम में ईश्वर प्रेम को स्वीकार किया।

**जायसी की प्रमुख रचना : पद्मावत**

यह एक प्रेम आख्यान है जिसमें अलौकिक प्रेम वर्णन के द्वारा अलौकिक प्रेम का वर्णन किया गया है। जायसी का प्रेम भावनाओं के चितेरे माने जाते हैं। उन्होंने काव्य में व्यक्त भावनात्मक पहलुओं को समझने और अपने काव्य में व्यक्त करने की अद्भुत शक्ति है। विरह वर्णन की दृष्टि से भी यह एक उत्तम काव्य है। इनकी अन्य रचनाएं हैं–

चित्ररेखा, आखिरी कलाम, कन्हावत और अखरावट। ये भावना प्रधान मानवतावादी कवि हैं। कल्पना, भाषा, अनुमति तथा आलंकारिता की दृष्टि से उनका साहित्य एक विशिष्ट स्थान रखता है। एक साहित्यकार के नाते जायसी का हिन्दी साहित्य में अमिट स्थान है।

**1.2.3 जायसी के काव्य की विशेषताएँ :** यहां हम महाकवि जायसी के साहित्य की प्रमुख विशिष्टताओं पर विचार करेंगे–

1. **विरह वर्णन :** जायसी का विरह वर्णन अतिश्योक्तिपूर्ण होने के साथ–साथ गंभीर है। इसमें तीव्र वेदना की अनुभूति है। इस विरह वर्णन में संताप तथा संवेदना है। मनुष्य प्रेम में पड़कर अनेक प्रकार की यंत्रणाएँ सहता है फिर भी उससे विलग नहीं होना चाहता। वह प्रेमतन्य संताप में भी सुख का अनुभव करता है। 'पद्मावत' में नागमती का विरह–वर्णन अत्यन्त मार्मिक ढंग से व्यक्त हुआ है। इस रचना में जायसी ने मानव–हृदय का सारा कलुष धुल जाता है। विरह वर्णन में जायसी ने बारहमासा वर्णन किया जो अत्यन्त संवेदनशील है। इसके लिए प्राकृतिक वस्तुओं और व्यापारों का दिग्दर्शन करते हुए दुख के विविध रूपों एवं कारणों की उद्भावना की गयी है। इस वर्णन में स्वाभाविकता एवं मार्मिकता है। बारहमासा में बारह महीनों का चित्रण है और प्रकृति का सूक्ष्म वर्णन है। जायसी का विरह वर्णन कवि परम्परा सिद्ध होने पर भी नवीन उद्भावनों से पूर्ण है।
2. **ऐतिहासिकता एवं कल्पना का प्रयोग :** जायसी की रचनाओं में ऐतिहासिक पात्र एवं घटनाएं हैं जिनकी प्रस्तुतत कल्पना के आधार पर की गयी है। इन्होंने अपनी कल्पना का प्रयोग करके ऐतिहासिक तथ्यों में फेर बदल किया है। उनका उद्देश्य प्रेम कथा के माध्यम से जीव और परमात्मा के बीच अलौकिक प्रेम का चित्रण करना था। इसका सबसे सुन्दर उदाहरण उनकी रचना 'पद्मावत' है जिसमें ऐतिहासिकता अपने सत्य और ठोस रूप में व्यक्त है। इसके साथ कल्पना का सुन्दर प्रयोग जायसी के कौशल का परिचायक है।
3. **श्रृंगार वर्णन :** जायसी की अधिकतर रचनाएं श्रृंगार रस प्रधान हैं। 'पद्मावत' में वियोग श्रृंगार प्रधान है। इसे आध्यात्मिक भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया गया है जिसमें मौलिक प्रेम की अभिव्यंजना अति सुन्दर बन पड़ी है। वियोग श्रृंगार षडऋतु वर्णन एवं बारहमासा का चित्रण है। जायसी 'प्रेम पीर' के कवि माने जाते हैं। उन्होंने 'पद्मावत' में राजारत्नसेन तथा रानी पद्मिनी के प्रेम के माध्यम से प्रेम भाव के महत्व को स्पष्ट किया है। इस वर्णन में संयोग श्रृंगार के भी सुन्दर चित्र मिलते हैं। प्रेम वर्णन में 'दाम्पत्य' तथा वात्सल्य प्रेम का वर्णन भी हुआ है। जायसी के अनुसार प्रेम एक नित्य, सुन्दर एवं एकान्तिक आनन्दप्रद भाव है। जायसी का उद्देश्य अलौकिक प्रेम–प्रदर्शन था। जब हृदय में प्रेम उत्पन्न होता है तो अपने प्रेम को पाने के लिए साधक कठिन से कठिन यातना सहने को तत्पर हो जाता है। 'पद्मावत' में वर्णित प्रेम आध्यात्मि भावभूमि पर प्रतिष्ठित किया गया है। इसमें चितौड़ को शरीर, राजा को तन, हृदय को सिंहल, सुआ को गुरु, नागमती को दुनिया–धंधा और राघव को शैतान बनाकर अलौकिक प्रेम का वर्णन किया गया है। जायसी का यह प्रेम वर्णन पवित्र एवं उच्च है।
4. **प्रकृति वर्णन :** जायसी के काव्य में प्रकृति का सुन्दर वर्णन मिलता है। इसके लिए उन्होंने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया जिनमें प्रमुख हैं–वस्तु परिगणन शैली, आलंकारिक शैली, रहस्यात्मक शैली और भावात्मक शैली। उन्होंने प्रकृति को स्वतन्त्र दृष्टिकोण से कम देखा क्योंकि उनकी दृष्टि अध्यात्म की खोज में लगी रही। इनका प्रकृति वर्णन उनकी अनुभूति, कल्पना शक्ति एवं ज्ञान–बाहुल्य का परिचायक है।
5. **दार्शनिक विचार :** जायसी की प्रमुख रचनाओं में उनके दार्शनिक विचार मिलते हैं। इनमें उनके ईश्वर, जीव, जगत् एवं जीवन सम्बन्धी विचार मिलते हैं। उनकी साधना का आधार ब्रह्मवाद है। उन्होंने ब्रहम को सशरीर मान कर योग की अनेक साधनाओं का समर्थन किया और इसलामी बाह्याचारों की नवीन व्याख्या की, जायसी के दार्शनिक विचारों पर भारतीय दर्शन का विशेष प्रभाव मिलता है।
6. **रहस्यवादी भावना :** जायसी की प्रमुख रचना पद्मावत में विभिन्न प्रकार की रहस्य भावना की अनुभूति होती है–जायसी ने वेदान्त की विचारधारा से प्रभावित होकर और सूफी विचारों के अनुरूप आध्यात्मवादी रहस्य भावना व्यक्त की है। उन्होंने जगत् के नाना रूपों में अलौकिक सत्ता का आभास पाते हुए प्रकृति मूलक

रहस्यवाद की अभिव्यक्ति की है। जायसी प्रेममार्गी कवि हैं किन्तु उनका यह प्रेम लौकिक न होकर आध्यात्मिक है। यह प्रेम मूलक रहस्यवाद का सुन्दर रूप है। उनकी रहस्यवादी भावना कहीं–कहीं पर योगसाधना के निकट प्रतीत होती है। अभिव्यक्ति मूलक रहस्यवाद के अन्तर्गत केवल वे वर्णन आते हैं जिनमें कवि ने अव्यक्त परम सत्ता के विषय में केवल संकेत मात्र दिए हैं। इनके रहस्यवाद में तीव्र विरहानुभूति या प्रेम की पीर है, लौकिकता एवं शृंगारिकता है, सांकेतिकता और व्यंजनात्मकता है। इनके रहस्यवाद का प्रमुख अंग प्रेम है। पदमावत् में प्रेम वर्णन की गहरी कसक और तीव्र विरह वेदना है। इसकी एक अन्य विशेषता इस की समष्टिमूलकता है। जायसी व्यष्टि में समष्टि का रूप देखते हैं। यह आत्मा और परमात्मा का सुन्दर रहस्यात्मक संकेत है। व्यष्टि की विरह की तड़पन समष्टि में समा जाती है। लौकिकता एवं शृंगारिकता जायसी के काव्य के महत्त्वपूर्ण अंग हैं। इनके रहस्यवाद में बहुर्मुखी प्रवृत्ति मिलती है। इनकी रहस्यवादी भावना अनेक रूपों में अभिव्यक्त हुई है।

7. **वस्तु वर्णन :** कथावस्तु की योजना काव्य–रचना का आधार होती है। कवि मुख्य कथा को अग्रसर करने के लिए आधिकारिक एवं प्रासंगिक दोनों प्रकार की कथा का प्रयोग करता है। इन प्रसंगों की उद्भावना वस्तु–वर्णन कहलाती है। जायसी की रचना–पद्मावत में मुख्य घटनाओं एवं परिस्थितियों का चुनाव किया गया है, जैसे–सिंहलद्वीप वर्णन, यात्रा वर्णन, जल क्रीड़ा वर्णन, समुद्र वर्णन, विवाह वर्णन, युद्ध वर्णन, चित्रौरगढ़ वर्णन, ऋतु वर्णन और सौन्दर्य वर्णन आदि। ये सभी वर्णन आलम्बन रूप में है, सुन्दर एवं भावानुकूल हैं।

8. **महाकाव्यत्व :** जायसी की प्रमुख रचना पद्मावत एक सफल महाकाव्य है। यह एक सर्गबद्ध रचना है जिसमें एक महाकाव्य के सभी अंग मिलते हैं। इसकी कथा प्राचीन होते हुए भी चिरनवीन एवं सार्वनवीन है। इसमें आत्मा के स्वप्न–जागरण की कथा बहुत सुन्दर ढंग से दी गई है। इसकी कथा ऐतिहासिक एवं परम्परा प्रख्यात है जिसमें कल्पना का प्रयोग भी है। इसमें व्यक्त परलौकिक तत्व भी महत्वपूर्ण है। लौकिक प्रेम वर्णन द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना इसकी विशिष्टता है। इस रचना में युग संदेश की नवीनता विद्यमान है। जायसी ने प्रतीकों द्वारा लौकिक प्रेम कथा को आध्यात्मिक प्रेमकथा बनाकर जो संदेश किया है वह निश्चित रूप से महान् है। इस संदेश के द्वारा मानव समाज प्रेम की उस उच्च भार–भूमि पर पहुंच जाता है जहां जाति–धर्म का भेद छोड़कर मनुष्य ब्रह्मा में लीन हो जाता है। यह रचना सर्गबद्ध है और इसकी भाषा प्रौढ़ है। इसमें जनभाषा ठेठ अवधी का प्रयोग है। मुख्य रूप में इसमें शृंगार रस का प्रयोग है। इसके साथ ही करुण तथा वात्सल्य रस का प्रयोग भी मिलता है।

9. **भाषा शैली :** जायसी की रचनाओं में अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग है। इनकी भाषा भावानुकूल है जिसमें ओज, प्रसाद तथा माधुर्य के गुण पाए जाते हैं। जायसी की भाषा में लोकोक्तियों तथा मुहावरों का भी पर्याप्त प्रयोग है। इनकी भाषा में सामाजिक शब्दों का प्रयोग कम है। इनकी भाषा आम बोलचाल की सीधी–सादी, देशी सांचे में ढली हुई मधुर भाषा है। वे एक ही प्रकार की भाषा लिखने में सिद्धहस्त थे। अवधी की खालिस बेमेल मिठास के लिए जायसी की भाषा सदैव महत्वशाली समझी जाएगी। जायसी ने प्रबन्धात्मक शैली का प्रयोग किया। इन पर फारसी की मसनवी शैली का प्रभाव मिलता है। इनकी रचनाओं में भाषा की सरलता, बोधगम्यता, प्रवाह एवं प्रभावोत्पादकता आदि गुण मिलते हैं और शैली में ओज, माधुर्य एवं प्रसाद तीनों गुण विद्यमान हैं। जायसी ने अलंकारों का सुन्दर प्रयोग किया है। रसात्मक प्रसंगों में भावों के अनुरूप अनुरंजनकारी अप्रस्तुतों की योजना हुई है। उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक जायसी के प्रिय अलंकार है। जायसी ने अपने काव्य में कला पक्ष और भावपक्ष का सुन्दर और समन्वित रूप प्रस्तुत करके अपनी सर्वज्ञता का परिचय प्रस्तुत किया। जायसी का एक मात्र लक्ष्य प्रेम की अभिव्यंजना करना था। हिन्दू कथाओं को आधार बना कर अपनी सरस प्रेम युक्त शैली में भारतीयता का पुट देकर काव्य रचना करना जायसी की विलक्षणता है। जायसी एक भावनाप्रधान मानववादी थे। विचारक होने के नाते उन्होंने प्राचीन मान्यताओं को ही आध्यात्मिक मान्यताओं के रूप में स्वीकार किया। वे एक सफल साहित्यकार थे। कल्पना, भावना, भाषा, अनुभूति तथा आलंकारिता आदि की दृष्टि से इनकी रचना 'पद्मावत' हिन्दी में विशिष्ट स्थान रखता है। यह हिन्दी का

सबसे बड़ा श्रेष्ठ प्रेम–काव्य माना जाता है, तथा ऊँचे दर्जे का प्रबन्ध काव्य है। यह जायसी की अनन्य और अद्वितीय कृति है। वस्तुतः जायसी प्रेममार्गी शाखा के कवियों में सर्वोच्च थे और उनकी प्रतिमाा अति प्रशंसनीय है।

पाठ्यक्रम में 'पद्मावत' के विविध सर्गों के अंश निर्धारित किए गए हैं अतः यहां इस रचना का क्रमबद्ध परिचय आवश्यक है।

'पद्मावत' सूफी कवि जायसी का प्रेमाख्यान है जिसकी हस्तलिखित प्रतियां प्रायः 'पद्मावती' या 'पद्मावति' आदि नामों से भी प्रचलित हैं। इस रचना के आधार पर जायसी को हिन्दी के उत्कृष्ट कवियों में उच्च स्थान प्राप्त है। यह ठेठ अवधी में लिखी गयी सुन्दर प्रेम कथा है जिसमें सिंहलद्वीप के राजा गंधर्वसेन की पुत्री पद्मावती की कथा है जो अत्यन्त सुन्दर थी। इसके पास हीरामन नामक एक तोता था जो उसे बहुत प्रिय था। एक दिन वह पद्मावती से उसके वर के विषय बात कर रहा था। उसकी बातें राजा गंधर्वसेन से सुन ली इसलिए वह डर कर भाग गया। एक दिन वह किसी बहेलए के जाल में फंस गया जिसने उसे चितौर के राजा रत्नसेन को बेच दिया। एक दिन रत्नसेन शिकार करने गए तो हीरामन उनकी रानी नागमती से सिंहलद्वीप की पद्मावती के रूप की बड़ी प्रशंसा की। रानी नागमती ने ईर्ष्यावश उसे मार डालना चाहा किन्तु उसकी एक सेविका ने उसे अपने घर में छुपा लिया। जब रत्नसेन शिकार से वापिस आए तो उन्होंने हीरामन के बारे पूछा। हीरामन को राजा के सामने लाया गया तो उसने राजा को सारी बात बता दी। पद्मावती के रूप–सौन्दर्य के बारे में सुन कर राजा रत्नसेन अधीर हो उठे और उसे प्राप्त करने की आशा में जोगी का वेश धारण करके घर से निकल पड़े। राजा के साथ सालह सौ अन्य व्यक्ति भी चल पड़े और हीरामन उनका पथ–प्रदर्शक बना। ये सब लोग कलिंग की ओर से जहाज में सवार होकर सिंहल की ओर चल पड़े। रास्तें में उन्हें अनेकों कष्ट सहन करने पड़े। सिंहलद्वीप पहुंच कर राजा रत्नसेन ने शिव के मंदिर में पद्मावती का नाम जपना आरंभ कर दिया। हीरामन ने जाकर यह समाचार पद्मावती को दे दिया, जो राजा के प्रेम से प्रभावित होकर विकल हो गयी। पंचमी के दिन वह शिवपूजन के लिए मंदिर में गयी जहां उसका रूप देखकर राजा रत्नसेन मूर्छित हो गया। पद्मावती ने उसके पास संदेश पहुंचाया कि दुर्ग सिंहलगढ़ पर चढ़े बिना उससे भेंट होना असंभव है। रत्नसेन ने शिव की सिद्धि पाकर उस दुर्ग में प्रवेश पाने की चेष्टा की। राजा पकड़ लिया गया और उसे सूली पर चढ़ाने का आदेश हो गया। राजा के साथियों द्वारा गढ़ को घेर लिया गया। शिव की कृपा से राजा विजयी हुआ। गंधर्वसेन ने पद्मावती का विवाह राजा से कर दिया। रत्नसेन पद्मावती को लेकर वापिस चितौर पहुंचा और सुखपूर्वक रहने लगा।

राजा के दरबार में राघव चेतन नामक एक पंडित था जिसका राजा के साथ मनमुटाव था। राजा से बदला लेने के लिए वह दिल्ली के बादशाह अलाउदीन के पास गया और पदमावती का कंगन दिखा कर उसे मुग्ध कर दिया। अलाउदीन ने राजा रत्नसेन के पास एक पत्र भेजा जिसे पढ़कर वह क्रोधित हो उठा और युद्ध की तैयारी करने लगा। अलाउदीन लम्बे समय तक चितौरगढ़ पर घेरा डालकर बैठा रहा पर उसे जीत नहीं सका। उसने रत्नसेन से संधि का प्रस्ताव रखा। रत्नसेन ने अलाउदीन को अपने महल में आमंत्रित किया और उसे प्रीतिभोज दिया। वहां पर रत्नसेन के साथ शतरंज खेलते समय सामने रखे दर्पण में पदमावती की झलक देखकर अलाउदीन मूर्छित होकर गिर गया। जब राजा उसे पहुंचाने बाहर तक गया तो अलाउदीन ने छलपूर्वक उसे अपने सैनिकों द्वारा पकड़वा लिया और उसे दिल्ली भेज दिया। पद्मावती यह समाचार सुन कर अधीर हो उठी और पति को छुड़वाने का उपाय सोचने लगी। गोरा और बादल नामक दो वीर सरदार सात सौ पालकियों में सशस्त्र सैनिकों को छुपाए हुए उनके साथ दिल्ली पहुंचे और कहला भेजा कि रानी पद्मावती राजा से मिलना चाहती है इसके लिए आज्ञा पाते ही एक ढठी हुई पालकी में से निकल कर एक लोहार ने राजा को बेड़ियां काट दी। राजा घोड़े पर बाहर आ गया। बादशाह की सेना द्वारा उसे पकड़ने का प्रयत्न किया गया किन्तु रत्नसेन के सैनिकों ने उसे सकुशल निकाल कर चितौर पहुंचा दिया। कुछ समय बाद रत्नसेन का कुंमलनेर के राजा देवपाल के साथ युद्ध हुआ जिसमें उसकी मृत्यु हो गयी। रानी पद्मावती और रानी नागमती रत्नसेन की चिता में जल कर सती हो गयी।

'पद्मावत' की कथा के दो प्रधान केन्द्र हैं–सिंहलदीप और चितौरगढ़। इसमें कथावस्तु का सुन्दर संघटन मिलता है और विविध घटनाओं का क्रमिक विकास है। इस रचना का वास्तविक उद्देश्य प्रेम–तत्व एवं विरह का सूफी

मतानुसार निरूपण करना है। जायसी ने रत्नसेन एवं पदमिनी की प्रेम–कथा को माध्यम बनाकर इस प्रेम कहानी को अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें प्रेम का आदर्श अत्यन्त उच्च एवं महान है तथा इसमें लौकिक तथा आध्यात्मिक जैसे दो भिन्न–भिन्न पक्षों का कोई महत्व नहीं। रत्नसेन को पद्मावती के लिए ऐसे प्रयत्न करने पड़ते हैं जो योग–साधना जैसे लगते हैं और उसे प्रति ऐसा व्यवहार भी करना पड़ता है जिसका वर्णन रहस्यवाद में मिलता है। रचना में व्यक्त रूप सौन्दर्य वर्णन भी इसी प्रकार का है। यह केवल एक सफल प्रेमाख्यान नहीं बल्कि एक उत्कृष्ट महाकाव्य है। इसमें प्रेमात्मक इतिवृत के साथ–साथ गंभीर भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति है, उदार चरित्रों का विशद चित्रण है और एक आदर्श उद्देश्य है। इसमें कवि की निश्छल भावुकता, सहजता और समन्वयवादी प्रवृत्ति मिलती है जिसके कारण कथा के अनेक स्थल अत्यन्त मार्मिक बन गए हैं। इसमें प्रयुक्त प्रतीकात्मक वर्णन शैली ने एक विचित्र सजीवता उत्पन्न कर दी है।

जायसी की दूसरी प्रसिद्ध रचना है – 'कन्हावत'।

यह जायसी की अक्षय कीर्ति का आधार मानी जाती है। यह श्री कृष्ण के जीवन पर आधारित एक महाकाव्य है जो जायसी को कृष्ण काव्य परम्परा का प्रथम महाकवि सिद्ध करता है। पाठ्यपुस्तक में निर्धारित इस पुस्तक के अंश में कवि जायसी ने कृष्ण के मनोहारी रूप का चित्रण किया है।

### 1.2.4 सप्रसंग व्याख्या :

फिर फिर रोई न.....बैठि सुनहि उंड बकु

**सप्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश जायसी की रचना पद्मावत के नागमती संदेश खण्ड में से लिया गया है। नागमति पति वियोग में तड़पती हुई एक पक्षी के पूछने पर अपना दर्द सुनाती है। कवि कहता है कि नागमति रूदन करती हुई जंगलों में फिरती है कोई उसके दुःख को नहीं समझता फिर एक पक्षी बोला कि तू अपनी विराग्नि से सब पक्षियों को जलाती है। तुम्हें क्या दुःख है जो रात को नींद नहीं आती। नागमति अपने दुःख का कारण बताती हुई रो पड़ी कि जिसके पति से बिछोड़ा हो गया है वह सो कैसे सकती है। वो मेरे हृदय से निकलते नहीं, रोने के कारण मेरी आँखों में 'काजल टिकता नहीं।' उन्होंने कहा था कि मैं सिंहलद्वीप जा रहा हूँ। स्वाति रूपी पति के लिए मेरे नेत्र रूपी सीपियाँ हमेशा प्रतीक्षा करती रहती हैं। मेरे पति जोगी बन कर घर से निकल गए हैं और किसी ने भी उनका कोई संदेश मुझे नहीं दिया। मैं नित्य सब जोगियों और चेतन प्राणियों से पूछती रहती है पर किसी ने भी मुझे उनका संदेश नहीं दिया।

हे पक्षी! मेरे लिए सब तरफ उजाड़ हो गया है क्या तुम उन तक मेरे संदेश पहुँचा सकते हो। मैं तुम्हें अपनी विरहावस्था के दुःखों को सुनाये देती हूँ, तुम एक बार बैठकर मेरे दुःख को सुन लो।

**2. नागमति दुःख विरह अपारा.....तन्हु न छाड़ै पास।**

**सप्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश में पक्षी नागमति के विरह के दुःखों का वर्णन करता है। पक्षी कहता है कि उसकी विरहाग्नि में पृथ्वी और आकाश दोनों ही जलते हैं। नगर और घर सब उसके बिना सूना लगता है। किसी का भी घर पुरुष विहीन न हो। ऐसा प्रतीत होता है जैसे तुम पर किसी ने कोई जादू–टोना कर दिया हो। उसी की वजह से तो जोग को भूल गया है और उधर तेरे वियोग में नागमति निराहार रह कर अब तक मर गई होगी। वह चीलों से कहती रहती कि मुझे प्रियतम के पास ले जाकर खा डालो। विरह रूपी मोर, नारी रूपी नाग को खाना चाहता है, तू बिल्ली के रूप में जाकर उसकी रक्षा कर। उसका शरीर पिंजर हो गा है, मांस झर गया है। हे जोगी तू जड़ी–बूटी लेकर अभी उसके पास पहुँच जा।

उसके विरह में इस प्रकार दुःखी होकर ही मैंने वन का रहना त्याग दिया है यद्यपि मैं भागकर समुद्र तट पर आ गया हूँ तो भी वह विरहाग्नि मेरा पीछा नहीं छोड़ रही।

### 1.2.4.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. जायसी की तीन रचनाओं के विषय में लिखें।

.....

.....

.....

### 1.2.5 सारांश

जायसी मध्यकाल के कवि हैं मध्यकाल में प्रचलित निर्गुण भक्ति को प्रेममार्गी के शाखा के प्रमुख कवि हैं। इन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय कथाओं को आधार बनाकर सूफी सिद्धांतों की व्याख्या की।

### 1.2.6 प्रश्नावली

1. जायसी की काव्यगत विशेषताएं लिखें।
2. जायसी के व्यक्तित्व का परिचय देते हुए उनकी रचनागत विशेषताएँ लिखें।
3. जायसी को 'प्रेम पीर' का वर्णन करें।

### 1.2.7 सहायक पुस्तकें :


क. जायसी एक नई दृष्टि : डॉ0 रघुवंश

ख. जायसी : विजयदेव नारायण साही

पाठ संख्या : 1.3 लेखिका : डॉ0 कुलदीप कौर

# सूरदास

## इकाई की रूपरेखा :

1.3.0 उद्देश्य
1.3.1 प्रस्तावना
1.3.2 सूरदास का व्यक्तित्व और कृतित्व
1.3.3 सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ
1.3.4 सप्रसंग व्याख्या
1.3.4.1 स्वयं जांच अभ्यास
1.3.5 सारांश
1.3.6 प्रश्नावली
1.3.7 सहायक पुस्तकें

## 1.3.0 उद्देश्य :

आप इस पाठ से भक्तिकालीन सगुण काव्यधारा की कृष्णमार्गी शाखा के सर्वाधिक प्रसिद्ध कवि सूरदास से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के पश्चात् :–

* सूरदास के व्यक्तित्व और कृतित्व से परिचित हो सकेंगे।
* सूरदास की काव्यगत विशेषताओं का विश्लेषण कर सकेंगे।
* सूरदास के काव्य की व्याख्या कर सकेंगे।

## 1.3.1 प्रस्तावना :

भक्तिकालीन कृष्णमार्गी शाखा के प्रमुख कवि सूरदास वात्सल्य और श्रृंगार वर्णन में अग्रणी रहे हैं। उनका समस्त काव्य लोकरंजन की भावना से ओत–प्रोत है। ब्रज संस्कृति तथा उससे जुड़े प्रसंगों की साहित्यिक झलकियां उनके काव्य का श्रृंगार बन कर उभरी हैं। वह अष्टछाप कवियों में भी सर्वोपरि स्वीकार किये गये हैं। सूरदास ने अपने काव्य के माध्यम से मानवीय भावों को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। उनके काव्य के अध ययन से उनके बहुश्रुत, अनुभव सम्पन्न, विवेकशील और चिंतनशील व्यक्तित्व का परिचय मिलता है। कुछ विद्वान सूरदास को कृष्णभक्त हिंदी कवियों में शिरोमणि कवि के रूप में भी स्वीकारते हैं।

## 1.3.2 सूरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :

### व्यक्तित्व :

सूरदास के जन्म को लेकर विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। कुछ विद्वानों के अनुसार उनका जन्म सम्वत् 1535 में हुआ जबकि कुछ के अनुसार सम्वत् 1540 में। पुष्टि सम्प्रदाय के अनुसार सूरदास जी स्वामी वल्लभाचार्य से आयु में दस दिन छोटे थे। इस प्रकार हम उनका जन्म सम्वत् 1535 से सम्वत् 1540 के बीच स्वीकार सकते हैं। इसी प्रकार उनके जन्म स्थान को लेकर भी विभिन्न मत प्रचलित हैं। कुछ विद्वान् मथुरा के पास 'रूनकता' नामक गांव को तथा कुछ विद्वान् दिल्ली के पास सीही गांव तथा कुछ विद्वान गोपांचल, ग्वालियर के पास स्वीकार करते हैं। परन्तु अधिकतर विद्वान् उनका जन्म–स्थान सीही को ही स्वीकारते हैं। सूरदास के माता–पिता के सम्बंध में कोई जानकारी नहीं मिलती। उनके वंश को लेकर भी कई प्रकार के अनुमान लगाये गये अधिकतर विद्वानों ने सूरदास को सारस्वत ब्राह्मण स्वीकार किया है। यह बात निर्विवाद है कि सूरदास नेत्र–विहीन थे किन्तु वह जन्मांध थे अथवा बाद में अंधे हुए थे, वह विवादाग्रस्त है। उनकी कविता में प्रकृति की शोभा और रूप वर्णन को देखते हुए इस धारणा की पुष्टि होती है कि इन्होंने जीवन और जगत् को अपनी आँखों से देखा था, इसलिए अनेक विद्वान् सूरदास की जन्मांध पर विश्वास नहीं करते हैं, परन्तु कई पद ऐसे मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि वह जन्म से अंधे थे–'सूरदास को कौन निहोरो नैनन हूँ कि हानि।'

अथवा 'सूर की बिरिया निठुर होइ बैठे जन्म अन्धकरयौ।'

'चौरासी वैष्णव की वार्ता' के अनुसार सूरदास अपने बहुत से सेवकों के साथ सन्यासी वेष में मथुरा के बीच गऊघाट पर रहा करते थे। यहीं उनकी भेंट महाप्रभु वल्लभाचार्य से हुई। सूरदास वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित होकर वहीं श्रीनाथ में मंदिर में कीर्तन करने लगे। वहीं पसौली नामक स्थान पर निवास करते थे तथा एक दिन भजन–कीर्तन करते समय आपका देहांत हो गया। इनकी मृत्यु का समय सम्वत् 1620 से 1640 माना गया है।

### कृतित्व :

सूरदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या पच्चीस मानी गयी है, किन्तु इन रचनाओं में से अधिकतर अप्रामाणिक तथा कुछ सूरसागर का ही अंश हैं। सूरदास की तीन रचनाओं को ही प्रमुख रूप से स्वीकार किया गया है–सूरसागर, सूरसारावली तथा साहित्य लहरी परन्तु अंतिम दो रचनाओं की प्रामाणिकता को संदिग्ध दृष्टि से देखा गया है। सूरदास द्वारा सूरसागर उनकी कीर्ति का आधार स्तम्भ है। यह एक गेय मुक्तक काव्य है जो श्रीमद्भागवत के समान इसमें भी बारह स्कंध हैं। यह ग्रंथ भागवत को आधार बनाकर लिखा गया परन्तु इसको भागवत का अनुवाद स्वीकार करना तर्कसंगत नहीं है। इसमें श्रीकृष्ण की लीलाओं का मार्मिक चित्रण है। श्रीकृष्ण के लोकरंजक रूप को विशेष रूप से दर्शाते हुए सूरदास ने वात्सल्य व शृंगार रस का विशेष रूप से ध्यान रखा है। इस ग्रंथ के अंतर्गत भ्रमरगीत के माध्यम से सगुण की निर्गुण पर विजय को भी दर्शाया गया है। सूरदास के काव्य में हिंदू संस्कृति में गृहस्थ जीवन तथा पूर्व–अवतार, विराट स्वरूप भगवान् कृष्ण का महिमामय चित्रण मिलता है। सूरदास की एक ही आशा और अभिलाषा है–कृष्ण–लीलागान।

**सूरसागर :** 'सूरसागर' में श्री कृष्ण की मधुर लीलाओं का विस्तारपूर्वक चित्रण किया गया है। यही कारण है कि इस ग्रन्थ में श्री कृष्ण का लोकरंजक रूप भी दिखाई देता है। सूरसागर का सबसे महत्वपूर्ण एवं रोचक अंश 'भ्रमरगीत' है। भ्रमरगीत में वियोग शृंगार का चित्रण बहुत ही मार्मिक है।

**सूरसारावली –** 'सूरसारावली' में 1100 पद है। संग्रहकार ने पुस्तक के आरम्भ में लिख दिया है कि रचना सूर कृत है तथा यह सूरसागर का सार एवं उनके पदों के अनुक्रमणिका है। परन्तु उक्त ग्रन्थ के अध्ययन से ज्ञात

होता है कि यह अनुक्रमणिका न होकर स्वतंत्र ग्रंथ है।

**साहित्य लहरी –** दृष्टकूट शैली लिखित रचना है इसे सूरसागर का अंश बताया गया है। इसमें सूरदास के वे पद हैं जिनमें नायिकाभेद, अलंकार एवं रस निरूपण है।

सूरदास के काव्य के तीन रूप हैं। विनय, बाल–लीला और श्रृंगार सम्बन्धी पद। सूरदास की प्रारम्भिक रचनाओं में दास्य–भाव की भक्ति मिलती है। महाप्रभु वल्लभाचार्य के दर्शन के बाद सूर के पदों में आत्मदीनता समाप्त हो गई और वह श्री कृष्ण को साकार रूप में भजने लगे। फिर उनकी भक्ति सख्य भाव की हो गई। उन्होंने कृष्ण के बाल्यकाल का अत्यंत सुन्दर तथा स्वाभाविक चित्रण किया है। स्वाभाविक चित्रण के साथ बच्चे का अत्यंत मनोवैज्ञानिक चित्रण सूर के वात्सल्य की दूसरी बड़ी विशेषता है। भ्रमरगीत के द्वारा सूरदास ने निर्गुण का खण्डन किया तथा सगुण का मण्डन। सूर का प्रकृति चित्रण नैसर्गिक और विशद है। वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्र में इन्होंने प्रकृति को उद्दीप्त रूप में ग्रहण किया। सूर काव्य में भक्ति, कविता और संगीत का सुन्दर समायोजन है। कृष्ण काव्य परम्परा में सूर बहुत अधिक महत्त्व के पात्र हैं। निम्न हम सूर के इन्हीं महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

जब हम सूरदास की चर्चा करते हैं तो काव्य–सौष्ठव की दृष्टि से अष्टछाप के कवियों में सबसे महत्वपूर्ण नाम सूरदास का ही है। वे पहले भक्त थे और बाद में कवि इसलिए तो सर्वश्री द्वारकादास पारीख और प्रभुदयाल मित्तल के कहे शब्द उन पर शत्–प्रतिशत चरितार्थ होते हैं। ''यद्यपि सूरदास अपने काव्य महत्त्व के कारण हिन्दी कवियों के मुकुटमणि माने जाते हैं, तब भी यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि उन्होंने कवि के दृष्टिकोण से अपने काव्य की रचना नहीं की है। उनके काव्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि वे पहले भक्त हैं और बाद में कवि।''

'सूरसागर' सूरदास का एक ऐसा ग्रंथ है जिसके आधार पर उनकी कीर्ति पताका फहरा रही है। सूर के पद इतने परिष्कृत और अनुशासन बद्ध हैं कि वे किसी चली आती हुई गीत काव्य परम्परा का चाहे वह मौखिक ही रही हो पूर्ण विकास प्रतीत होते हैं। पद परम्परा भले ही उनके पहले से ही प्रचलित थी पर सूर के पदों में जिस प्रकार उनका व्यक्तित्व ढल गया वह अन्यत्र नहीं मिलेगा। इनसे प्रभावित होकर ही तो इनकी मृत्यु के सम्बन्ध समय शोकविह्वल विट्ठलनाथ ने कहा था–''पुष्ठिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कुछ लेना हो सो लेत''

अर्थात् सूरदास पुष्टिमार्ग के जहाज़ हैं। अब उनके जाने का समय आ गया है उनसे जो कुछ लेना हो ले लो। इससे यही सिद्ध होता है कि सूरदास के समान अन्य कोई दूसरा नहीं।

सूर के काव्य की बात करें तो इनके काव्य में श्री कृष्ण के लोकरंजक रूप की प्रधानता अधिक प्रधान है। अगर इनके वर्ण्य विषय को देखा जाए तो प्रतीत होता है कि ये जन्मांध नहीं थे क्योंकि जन्मांध व्यक्ति इतना यथार्थ वर्णन नहीं कर सकता जितना कि सूरदास ने अपने काव्य में किया। वे बाद में अंधे हुए और अपनी अनुभूति की प्रबलता के कारण वे सजीव चित्रण करने में सफल रहे वल्लभाचार्य से भेंट होने के पश्चात् सूरदास की अभिव्यक्ति में विलक्षणता दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने वल्लभाचार्य की प्रेरणा से श्रीकृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन किया।

सूरदास की प्रतिभा का उत्कर्ष 'सूरसागर' में दिखाई पड़ता है, इसमें कृष्ण के बाल और यौवन इत्यादि की लीलाएं वर्णित हैं।

महाकवि सूरदास को बाल प्रकृति तथा बाल सुलभ अन्तर्वृतियों के वर्णन की दृष्टि से विश्व साहित्य में बेजोड़ माना जाता है, सूर के वात्सल्य वर्णन की विद्वानों ने भूरि–भूरि प्रशंसा की है, इसलिए तो आचार्य रामचन्द्रशुक्ल

जी ने कहा – ''वात्सल्य भाव का ऐसा अनूठा भावुक सूर के अतिरिक्त और कोई नहीं हुआ है, वे इस क्षेत्र का कोना कोना झांक आए हैं।

बल्लभाचार्य में सूरदास और नंददास को बालकृष्ण संबंधी पद गाने के लिए कहा था सूरदास की रचना 'सूरसागर' में बाललीला के पद संख्या में सबसे अधिक है। संख्या की अधिकता इस तथ्य की सूचक है कि इस लीला में सूर का मन सबसे अधिक रमा है। लीला के प्रति उनका अद्‌भुत आकर्षण है। सूरदास को वर्णन से संतोष नहीं है। कृष्णजन का काल्पनिक बिम्ब इतना यथार्थ हो उठता है कि वे गोवर्धन से नन्द के घर पहुंच जाते है और सीधे नंद को सम्बोधित करते हुए कहते हैं–

''(नंदन) मन मन अनंद भयौ, मैं गोवर्धन तै आयौ।

तुम्हारे पुत्र भयौं हौं मुनि कैं, अति आतुर उठि धयौ।''

उन्होंने लीला का ऐसा वर्णन किया है कि उसके प्रसंग में यशोदा तो है ही बलराम की छेड़छाड़ भी है, श्रीदामा की नाराज़गी भी है और अन्य बीसियों संदर्भ। यशोदा कृष्ण को पालना झुलाती है जिसका वर्णन सूर ने अत्यंत सुंदर ढंग से किया–

''जसोदा हरि पालनैं झुलावै।

हलरावै, दुलराइ मल्हावै, जोई सोइ कुछ भावै।''

जब कृष्ण अपनी मां यशोदा से चोटी के बढ़ने की बात करते हैं तो ऐसा लगता है जैसे सूरदास उस स्थान पर हो जहाँ ये सब बातें हुई जैसे–

''मैया कबहूं बढ़ेगी चोटी।

किती बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूं है छोटी।''

लाला भगवानदीन के अनुसार – ''सूरदास ने बाल चरित्र वर्णन में कमाल कर दिया यहां तक कि हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास जी इस विषय में इन की समता नहीं कर सकते। निःसंदेह हमें बाल के स्वभाव का जितना स्वाभाविक वर्णन सूर ने किया है उतना किसी अन्य भाषा के कवि ने नहीं किया।'' विद्वानों के विचारों को ध्यान में रखकर हम यही कहेंगे कि सूर वात्सल्य है और वात्सल्य सूर है। सूर ने पहली बार इस क्षेत्र में इतना सुन्दर कहा है कि इस संबंध में औरों के लिए कुछ कहने को नहीं रहा।

सूर के शृंगार रस की विश्वव्यापक भावभूमि को भक्त की उच्चतम भव्यता प्रदान करके उसे उज्जवल रस की संज्ञा से विभूषित किया है। सूर ने शृंगार रस का पुटपाक से जितना सौम्य और काव्य बनाया है वह कदाचित् ही अन्यत्र मिले। गोपियों और राधा का प्रेम आकस्मिक घटना न होकर सचमुच एक बिरवा या बेल के समान बढ़ा है, उनके शैशव का प्रेम यौवन के माधुर्य रस से परिणत हो गया है–

''लरिकाई को प्रेम कहौ, अलि कैसे करिकै छूटत।''

सूर की गोपियों की तुलना यदि अन्य कवियों की गोपियों से करें तो पता चलता है कि सूर की गोपियों में प्रेम के संस्कार पक्के हैं। इनमें विद्यापति की गोपियों के समान रूपलिप्सा नहीं वरन् सहचर की भावना है।

राधा और कृष्ण के प्रेम वर्णन में प्रेम का चरम आदर्श उपस्थित किया है, जैसे सुन्दरी राधा को देखकर कृष्ण आकर्षित हो जाते हैं। वे पूछते हैं –

''पूछत श्याम, कौन तू गोरी?

कहाँ रहति काकी है बेटी, देखी नांहि कबहू ब्रज खोरी।''

श्रृंगार रस के अन्य अंग नायिका भेद का वर्णन भी सूर के काव्य में मिलता है। आनन्द सम्मोहिता नायिका का चित्र भी सूर की लेखनी से बड़ा खरा उतरा है–

''नवल किशोर नवल नागरिया।

अपनी भुजा श्याम भुज ऊपर श्याम भुजा अपने उर धरिया।''

संयोग वर्णन के साथ–साथ सूरदास ने वियोग वर्णन भी अति उच्चकोटि का किया है सूर का संयोग चित्रण जितना सुखद और उल्लासमय है वियोग चित्रण उतना ही करूण, मर्मस्पर्शी और ह्रदयग्राही है। सूरदास के काव्य में यशोदा, गोपियाँ और राधा तीनों के विरह के वर्णन मिलते हैं। सूर ने राधा के माध्यम से प्रेम का जो परिमार्जित रूप उपस्थित किया है वह शायद ही भारतीय साहित्य में मिले। आचार्य द्विवेदी के शब्दों में – ''वियोग के समय की राधिका का जो चित्र सूरदास ने चित्रित किया है वह भी इस प्रेम के योग्य है। मिलन समय की मुखरा, लीलावती, चंचला और हंसोड़ राधिका, वियोग के समय मौन, शांत और गम्भीर हो जाती है। उद्धव ने श्रीकृष्ण से उनकी जिस मूर्ति का वर्णन किया है उससे पत्थर भी पिघल जाते हैं।''

सूर का 'भ्रमरगीत' सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वैदम्ध्यपूर्ण अंश है भ्रमरगीत में निर्गुण पर सगुण ने, सरसता ने शुष्कता पर प्रेम ने दर्शन पर भक्ति ने ज्ञान पर, राग ने वैराग्य पर आसक्ति ने अनासक्ति पर और संयोग ने वियोग पर विजय पाई है। आचार्य द्विवेदी के शब्दों में – ''भक्तों में मशहूर है सूरदास उद्धव के अवतार थे। यह उनके भक्त कवि जीवन की सर्वोत्तम आलोचना है। सूर ने अपने काव्य में एक ही जगह भगवान का साथ छोड़ा है–भ्रमरगीत में और इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस अवसर पर सूरदास को दूना रस मिला था'' सूर की गोपियों नन्ददास की भांति तक्रशील नहीं है, वे शांति से उद्धव का उपदेश सुनती रहती है। परन्तु नन्ददास की गोपियां उद्धव को निर्गुण का संदेश देने पर तक्रशून्य कर देती हैं, उद्धव अवाक् रह जाते हैं। वे उद्धव से प्रश्न कर देती है–

''जो उन्हीं कै गुन नाहि और गुन भये कहां ते।

बीज बिना तरू उगै कहौ तुम कौन कहां तो।''

सूर के उद्धव गोपियों के प्रेम के अथाह सागर में डुबकियां लेते–लेते आनंद विभोर हो जाते हैं। वे ज्ञान का संदेश देने आए थे परन्तु प्रेम का संदेश लेकर जाते हैं। वस्तुतः सूरदास का भ्रमरगीत विप्रलम्भ प्रधान प्रगीत सुना है। इसमें उपालम्भ प्रधान है जो कि वियोग कालीन भावभीनी अनुभूतियों से प्रसूत है। सूर की देखादेखी नंददास ने भ्रमरगीत लिखा परंतु इसमें अंतर है। सूर का भ्रमरगीत मुक्तक काव्य है तो नंददास का प्रबंधात्मक। सूर में लोक का रंग है तो नंददास में शास्त्र का। इन दोनों में भिन्नता के कारण ही सूरदास के भ्रमरगीत को सबसे उत्तम माना जाता है।

वात्सल्य और श्रृंगार के चित्रण के अतिरिक्त सूर के 'सूरसागर' में प्रासंगिक रूप से वीर, करूण, हास्य, रौद्र, भयानक रसों का भी चित्रण हुआ है पर वे रमें वात्सल्य और श्रृंगार के क्षेत्र में ही है। इन दोनों रसों के ये सम्राट हैं और हिन्दी का कोई भी कवि इनकी तुलना में नहीं ठहर सकता।

### 1.3.3 सूरदास की काव्यगत विशेषताएँ :

सूरदास भक्तिकालीन सगुण भक्ति धारा की कृष्णमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं। इनके उच्च कोटि के भक्त होने

का प्रमाण यह है कि गोसाईं विट्ठलनाथ ने इन्हें 'अष्टछाप' भक्तों में अग्रणी रखा है। उनके भक्त और कवि दोनों ही रूप एक–दूसरे पर आश्रित द्रष्टव्य होते हैं। इनके काव्य अध्ययन से निम्नलिखित विशेषताओं का ज्ञान होता है।

1. **भक्तिभावना :** सूरदास सगुण के उपासक थे। विशेषकर वह भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण का अपना इष्ट मानते थे। भक्ति उनके लिए साधन नहीं, साध्य थी। उनकी भक्ति में व्यंजित आत्म–समर्पण से स्पष्ट होता है कि उनकी भक्ति माधुर्य भाव की भक्ति थी। सूरदास से गोपियों के माध्यम से अपने हृदय की समस्त पीड़ा को अपने इष्ट व आराध्य श्रीकृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया है। श्रीमद्भागवत् में वर्णित कृष्ण भक्ति के अनुरूप ही सूरदास ने लीला गान भी किया है। वह सगुण भक्त थे तथा निर्गुण के प्रति उदासीनता उनमें स्पष्ट दिखाई देती है। एक स्थान पर वह आत्म–निवेदन करते हुए प्रभु से कहते हैं कि आप जैसे रखोगे वैसे ही रहूँगा।

'जैसेहिं राखहु तैसेहि रहि हौं।
जानत हों दुख–सुख सब जन को मुख करि कहा कहाँ।।'

2. **वात्सल्य वर्णन :** सूरदास के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है–वात्सल्य वर्णन जो बेजोड़ और अत्यंत स्वाभाविक बन पड़ा है। सूरदास ने पुरुष होते हुए भी माता के हृदय पाया था। माता यशोदा को आधार बनाकर वात्सल्य भावों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति करते हुए सूरदास ने बालक कृष्ण के प्रति यशोदा की चिंता, व्याकुलता, प्रसन्नता आदि भावों को स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है। कृष्ण की एक–एक क्रीड़ा को यशोदा के हृदय से देखते हुए उसे शब्दों के माध्यम से व्यक्त करते हुए सूरदास ने अद्भुत सफलता प्राप्त की है। श्री कृष्ण की बाल–लीलाओं को देखते हुए वह कहते हैं कि –

'चंद खिलौना तैहों मैया मेरी, चंद खिलौना लैहों।
धौरी को पयपान न करिहौं बेनी सिर न गुथैहौं।।'

सूरदास के इस वात्सल्य भाव को ध्यान में रखकर आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं कि, 'सूरदास वात्सल्य रस का कोना–कोना झांक आये हैं।'

3. **शृंगार वर्णन :** सूरदास के काव्य में शृंगार रस का चित्रण भी बेजोड़ बन पड़ा है। शृंगार–प्रेम भी उनकी भक्ति का प्रमुख साधन है। सूरदास ने शृंगार रस का चित्रण राधा तथा गोपियों के प्रेम के रूप में किया है। कवि राधा और कृष्ण की प्रेम लीला का व्यापक चित्रण करते हुए, प्रेम के चरम आदर्श की ओर संकेत करते हुए कहता है कि –

'सुनि राधा यह कह विचारै।
वै तैरे तू उनके रंग, अपनो मुख क्यौं न निहारे।।'

यहाँ राधा श्रीकृष्ण से प्रेम करते हुए श्रीकृष्णमय हो गई है। सूरदास के शृंगार का वियोग पक्ष अधिक उज्जवल एवं हृदयस्पर्शी बन पड़ा है। विरह की अग्नि में तप गोपियों का प्रेम सोने की भांति शुद्ध हो जाता है। 'भ्रमरगीत' में श्रीकृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात् गोपियों को कालिन्दी 'अतिकारी' दिखाई देती है तथा रात 'काली नागिन' जैसी प्रतीत होती है –

'आजु रैणि नहिं नींद परी।

जागत गिनत गगन के तारे, रसना रटत गोबिन्द हरी।।'

श्रीकृष्ण के विरह में गोपियों के नेत्रों से रात–दिन आँसू प्रवाहित होते रहते हैं। वे श्रीकृष्ण के विरह में अत्यन्त व्याकुल हैं।

4. **दास्य भक्ति भाव :** सूरदास के काव्य के अंतर्गत 'विनय पदों' में आत्म–दैन्य भाव को भी उजागर किया है। उनकी भक्ति का मूलाधार दास्य–भाव ही रहा है जिसके अंतर्गत वह स्वयं का दीन–हीन व तुच्छ बताते हुए अपने इष्ट श्रीकृष्ण को सर्वगुण सम्पन्न तथा उनका उद्धार कर्ता स्वीकारते हुए उनके विषम् भाव से प्रार्थना करते हैं।

''प्रभु हौं सब पतितन की टीकौ।

और पतित सब घौस चारि के हौं जो जनमत ही को।'

5. **प्रकृति–चित्रण :** सूरदास के काव्य का निर्माण ब्रज–मण्डल में प्रकृति के परिवेश में हुआ है। उन्होंने प्रकृति–चित्रण स्वतंत्र रूप में न करके कृष्ण–लीलाओं की पृष्ठभूमि के रूप में किया है। कृष्ण जीवन के समान इन्हें प्रकृति का भी कोमल रूप अधिक प्रिय लगा है। सूरदास ने अपने काव्य में प्रकृति और मानव हृदय के उद्‌गारों में सुंदर सामंजस्य दर्शाया है।

6. **कला पक्ष :** सूरदास ने ब्रज भाषा का प्रयोग करते हुए उसे इतना प्रबल और सहज बना दिया कि वह इससे पूर्व के अपने रूप से कहीं आगे जाकर संचार व काव्योप्रयोगी बन गई। सूरदास की काव्य भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्दों, खड़ी बोली, पूर्वी हिन्दी, बुंदेलखण्डी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, अरबी और फारसी शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता है, जिससे इनकी भाषा और भी अधिक प्रभावशाली बन पड़ी है। लोकोक्तियों, मुहावरों और अलंकारों के सफल प्रयोग के अर्थ में सौन्दर्य एवं गंभीर गुणों का समावेश हुआ है। कहीं–कहीं व्याकरण सम्बंधी त्रुटियां भी हैं, किंतु प्रवाहमयता, सरसता, स्वाभाविकता व सजीवता आदि गुणों के कारण सूरदास की काव्य–भाषा अपना एक विशेष स्थान रखती है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विवेचन से यह ज्ञात होता है कि सूरदास का काव्य हिन्दी साहित्य में विशेष स्थान रखता है। उन्होंने अपने काव्य में अपने आराध्य श्रीकृष्ण व राधा और गोपियों के माध्यम से वात्सल्य, शृंगार, भक्ति भावना आदि का सुंदर व सजीव चित्रण किया है। उनका संपूर्ण काव्य गीति–काव्य है। छन्दों के स्थान पर उन्होंने विभिन्न राग–रागिनियों का प्रयोग किया है किन्तु फिर भी कहीं–कहीं दोहा, रोला और चौपाई छंदों का भी प्रयोग देखने को मिलता है।

### 1.3.4 सप्रसंग व्याख्या :

**1. ''मैया मैं नहिं माखन खायौ.....सिव विरंचि नहिं पायो।''**

**सप्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश 'मध्या' में संकलित सूरदास की रचना में से उद्‌धृत है। इस पद में सूरदास ने कृष्ण की माखन चोरी जैसी बाल क्रीड़ा का सुन्दर वर्णन किया है।

**व्याख्या :** गोपियाँ जब जसोदा को कृष्ण की माखन चोरी करने की शिकायत करती हैं तब कृष्ण कहते हैं माँ मैंने माखन नहीं खाया। सभी दोस्तों ने मिलकर मेरे मुख को माखन नहीं खाया। सभी दोस्तों ने मिलकर मेरे मुख को माखन लगा दिया। क्या तुम नहीं देख सकती हो कि इतने ऊँचे स्थान पर लटकाए हुए बर्तन को क्या मेरे छोटे–छोटे हाथ उठा सकते हैं। इतना कह कर अपना मुँह साफ कर लिया। लाठी

को दूर फेंककर जसोदा कृष्ण को गले लगा लेती है। बाल कान्हा की प्यारी–प्यारी बातें उसका मन मोह लेती हैं। सूरदास कहते हैं कि जो सुख जसोदा कृष्ण के बाल रूप से प्राप्त करती है, उसको शिव और ब्रह्मा भी पा नहीं सकते।

**विशेष :** 1. सूरदास ने कृष्ण के बाल रूप का बहुत ही सहज रूप चित्रण किया।

2. वात्सल्य रस का परिपाक हुआ।

**2. ''मधुबन तुम क्याँ रहत हरे?.....नख–सिख लौं न जरे।''**

**कठिन शब्दों के अर्थ :** मधुवन–वृंदावन। ठाढ़े–खड़े हुए। मोहन–श्रीकृष्ण। द्रुम तट–वृक्ष के नीचे। साखा–टहनियाँ। टेकि–टेक कर। खरे–खड़े हुए हो। थावर–स्थावर, जड़ पदार्थ। जड़ अगम–निर्जीव और सजीव। ध्यान टरे–समाधि भंग होना। चितवनि–चितवन। पुहुप–पुष्प। धरे–धारण करना। बिरह दवानल–वियोग रूपी जंगल की आग।

**प्रसंग :** प्रस्तुत पद्यांश 'मध्या' में संकलित सूरदास कृत 'कृष्ण वियोग' शीर्षक पदों से लिया गया है। इस पद में सूरदास ने श्रीकृष्ण के मथुरा जाने के पश्चात् गोपियों के विरह का मार्मिक चित्रण करते हुए उनके उपालम्भ को अंकित किया है।

**व्याख्या :** कृष्ण के विरह में तड़प रही गोपियाँ मधुवन को सम्बोधित करते हुए कहते है कि अरे मधुवन, तुम अभी तक हरे–भरे क्यों बने हुए हो? आश्चर्य की बात है कि श्रीकृष्ण के गोकुल छोड़कर मथुरा जाने की वियोग–व्यथा से तुम खड़े–खड़े जल क्यों नहीं गए। तुम उन सुख के पलों को कैसे भूल गए हो जब श्रीकृष्ण तुम्हारे वृक्षों के नीचे खड़े होकर व शाखाओं का सहारा लेकर खड़े होते हुए बांसुरी बजाया करते थे। उनकी बांसुरी की मधुर ध्वनि को सुन जड़ और चेतन, स्थावर और जंगम, सब मोहित हो जाते थे। यहां तक कि मुनि लोगों का ध्यान भी भंग हो जाता था। तू उनकी इस मधुर चितवन को याद क्यों नहीं करता जब तेरी ओर वह प्रेम भरी दृष्टि से देखते थे और यह तेरी धृष्टता है कि तेरे वृक्षों पर बार–बार पुष्प खिलते हैं। सूरदास कहते हैं कि गोपियाँ मधुवन को उलाहना देती हुई कहती है कि तुम्हें तो श्रीकृष्ण के वियोग में जड़ों से लेकर चोटी तक जल जाना या उलट जाना चाहिए था।

**विशेष :** 1. गोपियों के हृदय की वियोग दशा को दर्शाया गया है।

2. भाषा भावानुकूल है।

3. स्मरण एवं रूपक अलंकारों का प्रयोग किया गया है।

### 1.3.4.1 स्वयं जांच अभ्यास

1. सूरदास की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

## 1.3.5 सारांश :

सूरदास कृष्णमार्गी शाखा के प्रमुख कवि है। इनकी गणना अष्टछाप कवियों में की जाती है। सूर जी

वात्सल्य और श्रृंगार के प्रसिद्ध कवि हैं।

### 1.3.6 अभ्यास के लिए प्रश्न :

1. सूरदास के वात्सल्य भाव पर विचार करें।
2. 'सूरदास श्रृंगार रस के सम्राट हैं' इस कथन पर अपना मत स्पष्ट कीजिए।
3. सूरदास की भक्ति–भावना पर विस्तारपूर्वक चर्चा करें।
4. सूरदास के विरह–वर्णन पर एक नोट लिखें।

### 1.3.7 सहायक पुस्तकें :


1. सूरदास – डॉ0 ब्रजेश्वर वर्मा।
2. सूर साहित्य – डॉ0 हजारीप्रसाद द्विवेदी।
3. सूर और उनका साहित्य – डॉ0 हरिवंशलाल शर्मा।
4. भारतीय साधना और सूरदास – डॉ0 मुंशीराम शर्मा।

# Mandatory Student Feedback Form

https://forms.gle/KS5CLhvpwrpgjwN98

Note: Students, kindly click this google form link, and fill this feedback form once.